संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य और स्वाधीनता आंदोलन

ऑनलाइन/ऑफलाइन

पर

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

आयोजक

मिथिला संस्कृत स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध संस्थान

महेशनगर, दरभंगा

(उच्च शिक्षा विभाग, बिहार सरकार)

12 जनवरी 2026

पंजीयन लिंक

Click Here

https://form.svhrt.com/69316f290a0bd8c6f89c58ff

पंजीयन की अंतिम तिथि : 31 दिसम्बर 2025

आलेख भेजने की अंतिम तिथि : 25 दिसम्बर 2025

मुख्य संरक्षक
डॉ0 एन. के. अग्रवाल
निदेशक
उच्च शिक्षा विभाग, बिहार सरकार

मुख्य अतिथि
श्री अजय यादव
सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार

कार्यक्रम अध्यक्ष
डॉ0 सुरेन्द्र प्र0 सुमन
निदेशक
मि.स.अ. शोध संस्थान, महेशनगर, दरभंगा

विषय प्रवर्तन : -

☛ प्रो. प्रभाकर पाठक, सेवानिवृत्त मानविकी संकायाध्यक्ष,ल.ना.मि.वि. दरभंगा

प्रमुख वक्तागण :-

☛ प्रो. रविभूषण, पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, रांची विश्वविद्यालय, रांची।
☛ प्रो. आशीष त्रिपाठी, हिन्दी विभागाध्यक्ष,बी.एच.यू
☛ प्रो. बजरंग बिहारी तिवारी, देशबंधु महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
☛ प्रो. नन्द किशोर नन्दन, सेवानिवृत्त वि.हिंदी विभागाध्यक्ष,बी आर ए बी यू, मुजफ्फरपुर
☛ प्रो. मनोज कुमार, विश्वविद्यालय संस्कृत विभागाध्यक्ष,बी आर ए बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

विशिष्ट अतिथिगण:-

☛ प्रो. हृषिकेश झा, सेवानिवृत्त वि.संस्कृत विभागाध्यक्ष,ल.ना.मि.वि.दरभंगा
☛ श्री शंकर प्रलामी, जनकवि एवं जनबुद्धिजीवी
☛ देवनारायण यादव, सेवानिवृत्त निदेशक, मिथिला संस्कृत स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध संस्थान, दरभंगा
☛ प्रो. उमेश कुमार, वि.हिंदी विभागाध्यक्ष,ल.ना.मि.वि.दरभंगा
☛ प्रो. मुनेश्वर यादव, वि.राजनीति विज्ञान विभागाध्यक्ष, ल.ना.मि.वि. दरभंगा
☛ डॉ. संतन कुमार राम, निदेशक, इग्नू, दरभंगा

कार्यक्रम प्रबंधक
श्री नेती कामति

संयोजक
डॉ० रामबाबू आर्य

राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने हेतु लिंक : Click Here
https://form.svhrt.com/69316f290a0bd8c6f89c58ff

संस्थान के बारे में

मिथिलांचल की हृदयस्थली दरभंगा शहर के पश्चिमी छोर पर बागमती की गोद में अवस्थित मिथिला संस्कृत स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध संस्थान की स्थापना सन **1952 ई.** में महाराज दरभंगा के सौजन्य से हुई थी, जिसका उद्घाटन करने के लिए भारत के प्रथम राष्ट्रपति **डॉ. राजेंद्र प्रसाद** यहां पधारे थे। इस संस्था का अपना अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त गौरवशाली इतिहास रहा है। संस्कृत भाषा के उन्नयन के लिए जर्मन, फ्रेंच सहित प्राचीन इतिहास और दर्शनशास्त्र विषय के अध्ययन तथा उत्कृष्ट शोध के लिए इसे मान्यता प्राप्त है। इन सभी विषयों में यहां शिक्षकों के स्वीकृत पद भी हैं। इसके अपने सुव्यवस्थित कार्यालय भवन, प्रकाशन भवन, पांडुलिपि भवन, छात्रवास, अतिथि निवास, शिक्षक आवास और निदेशक आवास सहित 62 एकड़ में फैला हुआ भू-भाग है, जिसमें आम, लीची सहित कतिपय फलदार वृक्ष और कीमती पेड़-पौधे भी हैं। पांडुलिपि भवन में अतिप्राचीन लगभग साढ़े बारह हजार अद्भुत पांडुलिपियां हैं। पुस्तकालय में कई दुर्लभ पुस्तकें हैं, जो इनकी महत्ता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए आज भी सक्षम हैं; किंतु कालक्रम में व्यवस्थाजनित अनदेखी के कारण इसमें उजाड़ का मंजर देखने को मिलता है। ऐसे ही परिवेश में मुझे इस संस्था के उन्नयन के लिए निदेशक की जिम्मेवारी सौंपी गई है। अपने लगभग दो वर्षों के कार्यकाल में संस्थान के चहुँमुखी विकास के लिए मैंने अनथक प्रयास किया है और बहुत हद तक सफलता भी प्राप्त की है। विगत दो वर्षों में संस्थान एवं पूरे परिसर की सुरक्षा व्यवस्था चुस्त दुरुस्त हुई है। इसके साथ ही शैक्षणिक माहौल में भी उत्तरोत्तर विकास हुआ है। इस दरम्यान अभी तक तीन राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित किए गए, जिसमें राष्ट्रीय स्तर के कतिपय उच्च कोटि के विद्वानों ने व्याख्यान दिए। शोध पत्रिकाओं एवं पुस्तकों के प्रकाशन हुए। बिहार के माननीय मुख्यमंत्री **श्री नीतीश कुमार** द्वारा स्वीकृत एवं आवंटित राशि से संस्थान लगातार उन्नयन की ओर अग्रसर है।

सेमिनार के बारें में...

भारत विविधताओं का देश है। यह विविधता बोझ नहीं, देश की पहचान है, सम्पदा है। विविधता का एक रूप यहाँ की भाषाओं में दिखायी देता है। संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित बाइस भाषाओं के अलावा इस सूची के बाहर भी कई भाषाएँ, सहभाषाएँ एवं बोलियाँ हैं। इन सबका अपना समृद्ध साहित्य है- लिखित और/अथवा मौखिक दोनों रूपों में। इन भाषाओं में कोई आत्यंतिक भिन्नता नहीं हैं। अपना-अपना वैशिष्ट्य लिए ये भाषाएँ एक-दूसरे से बहुत-कुछ साझा करती रही हैं। इस साझेदारी से ही भारतबोध विकसित हुआ है। जिस समेकित परंपरा ने संस्कृत में रचित रामायण और महाभारत को साहित्य का उपजीव्य माना उसी परंपरा ने पैशाची में रचित 'वड्डकहा' तथा तमिल में सृजित 'शिलप्पदिकारम' को भी उपजीव्य समझा। भारतीय साहित्य की अवधारणा इनमें से किसी को छोड़कर मुकम्मल नहीं हो सकती।

भारतीय भाषाओं में सघन संवाद का अगला दौर भक्ति आंदोलन में आया। देश के हर कोने से समाज सुधार की लहर उठी और भक्ति के विविधवर्णी महासागर में मिल गई। इसी दौरान फ़ारसी-संस्कृत संवाद भी तीव्र व सघन हुआ। संस्कृत की बहुत सी कृतियाँ फारसी में अनूदित हुईं।

भारतीयता का प्रबल बोध औपनिवेशिक युग में विकसित हुआ। स्वाधीनता के लिए जनजागरण की ज़रूरत थी। भारत में सहोदरी हिंदी और उर्दू एकमेक हिंदवी के बतौर खड़ी बोली में स्वाधीनता के लिए मचलने लगी। सभी भारतीय भाषाओं का साहित्य इस मोर्चे पर डटा रहा। परतंत्रता के विरुद्ध बिगुल फूँकने में भारतीय साहित्यकार अग्रणी पंक्ति में रहे। उन्होंने ख़तरा उठाकर, यातनाएँ सहकर स्वाधीनता का भाव जगाने वाला साहित्य रचा। भारतीय भाषाएँ आपस में नए सिरे से संवादरत हुईं। संस्कृत इनमें कथमपि पीछे नहीं दिखी। एक गीता कुरुक्षेत्र में रची गई थी, दूसरी 'सत्याग्रह गीता' स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान एक गाँधीवादी स्त्री रचनाकार द्वारा लिखी गई। गुजराती, मराठी, बांग्ला, तेलुगु, उर्दू, पंजाबी, कश्मीरी, हिंदी, उड़िया आदि भाषाएँ स्वाधीनता की चेतना से जुड़कर और समृद्ध हुईं तथा उन्होंने अपने साहित्य से समाज सुधार आंदोलनों को गति दी।

संबंधित उपविषय

1. साहित्य और स्वाधीनता : आज़ादी के आंदोलन के संदर्भ में
2. संस्कृत साहित्य में औपनिवेशिकता के संदर्भ
3. स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान संस्कृत महाकाव्य लेखन
4. स्वतंत्रता आंदोलन और स्त्री रचनाकार
5. भारतीय स्वाधीनता संग्राम में संस्कृत एवं अन्य भाषाओं में संवाद
6. मैथिली साहित्य और आज़ादी की लड़ाई
7. अवधी-भोजपुरी और अन्य बोलियों में रचित आज़ादी के तराने
8. दक्षिण भारतीय भाषाएं एवं स्वतंत्रता आंदोलन
9. उर्दू अदब में आज़ादी की गूँज
10. हिंदी-उर्दू साझी संस्कृति और जनजागरण का सवाल
11. मराठी साहित्य में नवजागरण की चेतना
12. बांग्ला लेखन में राष्ट्रीयता
13. केरल रेनेसां और मलयालम साहित्य
14. स्वाधीनता आंदोलन और दलित चेतना
15. स्त्री मुक्ति का प्रश्न : महात्मा फुले की वैचारिकी
16. आंतरिक उपनिवेशवाद से मुक्ति और आंबेडकरी चिंतन
17. पूर्वोत्तर की भाषाओं में भारतबोध
18. भारत की सांस्कृतिक एकता, स्वतंत्रता आंदोलन और साहित्य की भूमिका
19. साझी शहादत साझी विरासत की संवाहक दो आब और स्वाधीनता आंदोलन।

नोट : मुख्य विषय से संबंधित शीर्षक बनाने के लिए आप स्वतंत्र हैं।

शोध पत्र हेतु आमंत्रण

हम सभी क्षेत्रों के अनुसंधान विद्वानों, संकाय सदस्यों, शिक्षाविदों और शोधार्थियों को पंजीकरण करने और संगोष्ठी में भाग लेने के लिए आमंत्रित करते हैं। इच्छुक प्रतिभागियों से अनुरोध है कि नीचे दिए गए Email पर अपना शोध-सार एवं शोध आलेख प्रेषित करें।

- शोध सारांश 500 शब्दों में होना चाहिए। इसमें पूरा नाम, पदनाम, संस्थान, मोबाइल नं. और ईमेल लिखा होना चाहिए।
- पूर्ण शोध आलेख अधिकतम 5000 शब्दों में होना चाहिए। इसमें पूरा नाम, पदनाम, संस्थान, मोबाइल नं. और ईमेल लिखा होना चाहिए।
- शोध पत्र का शीर्षक, मुख्य विषय, शोध प्रविधि एवं निष्कर्ष स्पष्टतः उल्लिखित होना चाहिए।
- शोध पत्र हिन्दी का Krutidev 010 तथा अंग्रेजी का Times New Roman (Font 12) में टंकित होना चाहिए।
- शोध आलेख Doc या Docx फॉर्मेट में Email : sodhsansthan23@gmail.com पर ही भेंजे। पी.डी.एफ. या स्कैन किया हुआ शोध पत्र या शोध सारांश स्वीकार नहीं किए जायेंगे।

महत्वपूर्ण तिथियाँ :

- **शोध सारांश भेजने की अंतिम तिथि : 25-12-2025**
- **पूर्ण शोध पत्र भेजने की अंतिम तिथि : 25-12-2025**
- **पंजीकरण की अंतिम तिथि : 31-12-2025**

पंजीयन शुल्क :

- **शोध छात्र/छात्र/प्राध्यापक : 500/-**

संपर्क सूत्र :

- ईमेल : sodhsansthan23@gmail.com
- फोन : 8986379070, 9334550859

Payment Mode

9204653234

G-Pay & Phone - Pay